वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1986-87

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Open University

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

–इन्दिरा गांधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

– Indira Gandhi

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Open University

वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report
1986-87

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम 1985(संख्या 50, 1985) अनुच्छेद 28 के तहत

As required under section 28 of The Indira Gandhi National Open University Act 1985
(No. 50 of 1985)

विषय सूची

		पृष्ठ
I	परिचय	3
II	विश्वविद्यालय का संगठन	3
III	विश्वविद्यालय के अधिकारी	3
IV	भौतिक सुविधाओं का विकास	4
V	स्टाफ	5
VI	शैक्षिक योजना और विकास	6
VII	क्षेत्रीय सेवाएँ	6
VIII	समन्वय तथा स्वर निर्धारण	7
IX	विदेशी विकास संचालन (यू॰ के॰) सहायता	7
X	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	8
XI	वित्त पोषण	8
	परिशिष्ट	9-14

I. परिचय

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) सितंबर, 1985 में संसद अधिनियम द्वारा स्थापित हुआ। विविध माध्यमों से शिक्षा और ज्ञान का विकास और प्रसार इसका उद्देश्य है। देश की जनता के उस वर्ग तक उच्च शिक्षा को पहुँचाना, जो किन्हीं कारणों से शिक्षा संस्थाओं में जाकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर सका, इसके उद्देश्यों में प्रमुख है।

2. अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दूर शिक्षा और सतत् शिक्षा के विविध साधनों का उपयोग करते हुए यह विश्वविद्यालय देश के अन्य विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा की अन्य संस्थाओं के सहयोग से कार्य करता है और वर्तमान युग की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उच्च स्तर की शिक्षा देने के लिए अत्याधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि और नवीन शैक्षिक प्रविधि का उपयोग करता है। दूसरे शब्दों में यह विश्वविद्यालय शैक्षिक अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रसार के माध्यम से देश के विकास में एक अहम भूमिका निभाने का यत्न करता है। विश्वविद्यालय के प्रमुख अभिलक्षण निम्न प्रकार से हैं : पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लचीले नियम; छात्र की अपनी गति और फुर्सत के अनुसार पढ़ने की सुविधा; विविध विषयों में से अध्ययन के लिए अपनी रुचि के विषय चुनने की स्वतंत्रता, घर बैठे पढ़ने की सुविधा; और आधुनिक शिक्षा पद्धति और संचार प्रविधि का उपयोग।

3. जैसे कि 1985-86 के वार्षिक प्रतिवेदन में उल्लेख किया गया था, विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रथम वर्ष में भूमि का अधिग्रहण हुआ और प्रधान मंत्री द्वारा 19 नवंबर, 1985 में विश्वविद्यालय का विधिवत् उद्घाटन हुआ। सुचारु रूप से कार्य करने की दृष्टि से विश्वविद्यालय ने किराये पर भवन लिया, स्टाफ के लिए हॉस्टल तथा आवास की सुविधा उपलब्ध करायी, जिससे देश भर में से सुयोग्य व्यक्तियों को आकृष्ट किया जा सके और इसी तरह की अन्य भौतिक सुविधाओं की ओर ध्यान दिया।

4. वर्ष 1986-87 में विश्वविद्यालय ने शैक्षिक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने पर ज़्यादा ध्यान दिया, जैसे कार्य क्षेत्र का आकलन, शैक्षिक कार्यक्रमों का दिशा निर्धारण, पिछले शैक्षिक कार्यकलापों को मूर्त रूप देना, प्रस्तावित कार्यक्रमों पर कार्य प्रारंभ करना तथा आने वाले वर्षों के संदर्भ में कार्यक्रमों और आवश्यक सुविधाओं के परिप्रेक्ष्य में योजना बनाना आदि। इस संदर्भ में पहले छह महीनों में जनवरी, 1987 में प्रारंभ होने वाले दो परीक्षणार्थ पाठ्यक्रमों की तैयारी पर अधिक बल दिया गया। अन्य भौतिक सुविधाओं में हुए विस्तार, आवश्यक शैक्षिक और सहयोगी स्टाफ के चयन तथा अन्य संगठनात्मक सुविधाओं के रहते आशा की जाती है कि आगे शैक्षिक कार्यक्रमों में त्वरित गति लायी जा सकती है।

II. विश्वविद्यालय का संगठन

विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र के संदर्भ में इस वर्ष शैक्षिक प्रयासों को रूप दिया गया। कार्यान्वयन के संदर्भ में यह अनुभव किया गया कि विश्वविद्यालय की सफलता अंततः सामग्री निर्माण (मुद्रित सामग्री, टेप पाठ तथा वीडियो पाठ), सामग्री का मुद्रण और वितरण आदि महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं के प्रभावशाली ढंग से कार्य करने पर निर्भर होगी। इन व्यवस्थाओं के समन्वित कार्य के लिए अनिवार्य होगा कि विश्वविद्यालय उपयुक्त संगठन की व्यवस्था का विकास करे। विश्वविद्यालय के संगठन में प्रशासनिक दृष्टि से प्रभावशाली समन्वय, कार्य प्रणाली का लचीलापन, परीक्षण और नव-प्रवर्तन के प्रति उन्मुखता आदि गुणों का होना आवश्यक है। विश्वविद्यालय ने कुलपति की अध्यक्षता में एक कार्य दल का गठन किया जिसने विदेश के कई ओपन विश्वविद्यालयों, विशेषकर यू॰ के॰ ओपन विश्वविद्यालय, सुखोथाई थमथिरात ओपन विश्वविद्यालय, थाईलैंड, अलामा इकबाल विश्वविद्यालय, पाकिस्तान आदि के प्रशासनिक और संगठनात्मक स्वरूप का अध्ययन किया। भारतीय परिस्थिति तथा अधिनियम द्वारा घोषित विश्वविद्यालय के कार्यों के परिप्रेक्ष्य में इस विश्वविद्यालय के संगठन का स्वरूप निश्चित किया गया है जो परिशिष्ट-1 में दिखाया गया है। यह अनुमान है कि विश्वविद्यालय का यह संगठन प्रभावी ढंग से कार्य कर सकेगा। तीन वर्ष तक इस प्रणाली के कार्य का निरीक्षण करने के बाद इसकी समीक्षा की जाएगी और आवश्यकतानुसार इसमें संशोधन किया जाएगा।

इस प्रकार विकसित संगठनात्मक ढाँचे से कार्य और दायित्व का बँटवारा, विभिन्न कार्यकलापों की उपलब्धि की समयबद्ध योजना और समय-समय पर चयन किये जाने वाले कर्मचारियों के कार्य का निर्धारण आदि में बड़ी सुविधा हुई।

III. विश्वविद्यालय के अधिकारी

1. प्रथम प्रबंध बोर्ड और योजना बोर्ड का गठन

संगठनात्मक स्वरूप निश्चित करने के बाद तदनुसार कार्यवाई की गयी। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम 1985 के अनुभाग-39 (बी) और (सी) में प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए राष्ट्रपति ने विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष की हैसियत से पहले प्रबंध

बोर्ड और पहले योजना बोर्ड का गठन किया (देखें भारत सरकार का पत्र संख्या 5-42/85. यू./दिनांक 8 दिसंबर, 1986)। प्रथम प्रबंध बोर्ड और योजना बोर्ड के गठन का विवरण परिशिष्ट-2 में दिया गया है। संबिधि द्वारा विद्या परिषद् की स्थापना होने तक योजना बोर्ड ही विद्या परिषद् का कार्य भी करता रहेगा।

2. बोर्डों की बैठकें

विश्वविद्यालय के इन दो अभिकरणों के गठन के बाद यह पहल की गयी कि विश्वविद्यालय के अन्य अभिकरणों जैसे विद्या परिषद्, विविध विषयों के विद्यापीठों और वित्त समिति का गठन किया जाए। प्रबंध बोर्ड की जनवरी तथा मार्च, 1987 में दो बैठकें हुईं और योजना बोर्ड की एक बैठक मार्च, 1987 में हुई। प्रबंध बोर्ड की पहली दो बैठकों में कुलाध्यक्ष द्वारा प्रथम कुल सचिवों और वित्त अधिकारी की नियुक्ति और स्थापना के बाद से इस विश्वविद्यालय की प्रगति का विवरण दिया गया। इसके अलावा परिसर का विकास, अध्यापकों का चयन तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर चर्चा हुई। 1987-88 के वित्तीय अनुमानों की समीक्षा के उपरान्त मंजूर किया गया और आगे के लिए वित्तीय शक्तियों के प्रत्यायोजन का प्रारूप निश्चित किया गया।

योजना बोर्ड ने अपनी पहली बैठक में विश्वविद्यालय की शैक्षिक प्रगति की जानकारी प्राप्त की और विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यकलापों की चर्चा की। प्रबंध डिप्लोमा, दूर शिक्षा में डिप्लोमा, इन दोनों परीक्षणार्थ कार्यक्रमों की रूपरेखा की चर्चा की गयी और उपाधि कार्यक्रम तथा अन्य पाठ्यक्रमों के विकास और प्रारंभ करने से संबंधित सामान्य चर्चा भी हुई।

3. विश्वविद्यालय के विद्यापीठ और प्रभाग

प्रबंध बोर्ड ने प्रारंभ में निम्नलिखित विद्यापीठों की स्थापना की सहमति दी:

1. प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ
2. मानविकी विद्यापीठ
3. सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
4. विज्ञान विद्यापीठ
5. प्रौढ़ तथा सतत् शिक्षा विद्यापीठ
6. शिक्षा विद्यापीठ

इनके अतिरिक्त दूर शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक मानव संसाधनों के विकास के लिए, अध्यापक प्रशिक्षण और छात्र सेवाओं के लिए, सामग्री के मुद्रण तथा प्रकाशन के लिए, आडियो-वीडियो पाठों के निर्माण के लिए, और प्रवेश और मूल्यांकन के लिए पाँच प्रभागों की स्थापना की गई जिन्हें क्रमशः दूर शिक्षा प्रभाग, क्षेत्रीय शिक्षा प्रभाग, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, संचार प्रभाग तथा प्रवेश एवं मूल्यांकन प्रभाग नाम दिया गया। कंप्यूटर सेवा प्रभाग को गठित करने के बारे में भी प्रयत्न शुरू किये गये।

IV. भौतिक सुविधाओं का विकास

1. किराये पर भवन निर्माण

जैसे कि पहले वार्षिक प्रतिवेदन में बताया गया है, विश्वविद्यालय ने मैदान गढ़ी नामक गाँव में अपने स्थायी परिसर के लिए भूमि का अधिग्रहण कर लिया है। किंतु जब तक भवन-निर्माण का कार्य पूरा नहीं हो जाता, कार्य करने के लिए विश्वविद्यालय ने वाई॰ एम॰ सी॰ ए॰ कल्चरल सेंटर, दक्षिण दिल्ली में सर्वप्रिय विहार तथा हौज़खास में तीन भवन कार्यालय तथा आवासीय व्यवस्था के लिए अस्थायी रूप से किराये पर लिए। जनवरी, 1987 से शुरू किये जाने वाले दो डिप्लोमा कार्यक्रमों के लिए तथा प्रस्तावित ग्रामनिकास कार्यक्रम, स्नातक उपाधि कार्यक्रम और महिला शिक्षा कार्यक्रम आदि का कार्य प्रारंभ करने के संदर्भ में यह सोचा गया कि अधिक भवनों की आवश्यकता पड़ेगी। इन सब पाठ्यक्रमों के लिए स्टाफ का चयन किया जाना था और विशेषज्ञ समितियों का गठन किया जाना था। तदनुसार विश्वविद्यालय ने तीन और स्थानों पर भवन किराये पर लिये—वाई॰ एम॰ सी॰ ए॰ चौथी मंजिल, सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया तथा तुगलकाबाद संस्था क्षेत्र। भवन लेने की आवश्यकता इस कारण से भी थी कि आडियो-वीडियो सामग्री का निर्माण, कंप्यूटर सुविधा तथा पुस्तकालय की स्थापना का कार्य भी तुरन्त शुरू किया जाना था।

2. स्थायी परिसर के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वास्तु-अभिकल्पन प्रतियोगिता

स्थापना के समय से ही विश्वविद्यालय अधिगृहित भूमि पर परिसर का निर्माण करने के संदर्भ में प्रगतिशील है। यह बात विचारणीय रही है कि विश्वविद्यालय परिसर अपनी विशिष्ट कार्य पद्धति के अनुरूप वास्तु शैली की दृष्टि से सुन्दर हो और सामंजस्यपूर्ण हो। इस संदर्भ में विश्वविद्यालय को परामर्श देने के लिए शिक्षाविदों, वास्तुविदों तथा नगर कला आयोग, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर और केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के प्रतिनिधियों की एक भवन समिति गठित की गयी। इस समिति के कार्य के संयोजन के लिए एक प्रोफेशनल सलाहकार की भी नियुक्ति की गयी। इस समिति ने दो स्तरों पर राष्ट्रीय वास्तु-अभिकल्पन प्रतियोगिता की योजना बनायी। विश्वविद्यालय को मिली जमीन के उपयोग से पहले कुछ तकनीकी बातों का पालन करना है और उसमें विलंब हुआ है। इसी कारण वास्तुकार के चयन की प्रक्रिया पूरी नहीं हो पायी है। फिर भी, दिल्ली प्रशासन द्वारा भूमि को निर्माण योग्य बनाने के कार्य के आधार पर ट्यूबवेल खोदना, पेड़ लगाना आदि कार्य शुरू हो चुके हैं।

3. अस्थायी भवन

स्थायी परिसर के निर्माण में अधिक समय लग सकता है। किराये के भवन महँगे पड़ते हैं। इसलिए अस्थायी भवन के निर्माण पर किया जाने वाला खर्च शीघ्र ही वसूल हो जाता है। इन कारणों से विश्वविद्यालय ने कुछ अर्द्ध-स्थायी भवनों के शीघ्र निर्माण की योजना प्रारंभ कर दी है। 80 हजार वर्ग फुट क्षेत्र में अस्थायी भवन निर्माण की योजना के लिए सरकारी भवन निर्माण अभिकरणों से बातचीत शुरू हो गयी है।

V. स्टाफ

1. स्टाफ की स्थिति

प्रथम वर्ष में कुलपति की नियुक्ति के बाद विश्वविद्यालय ने अपना कार्य एक समकुलपति और प्रतिनियुक्ति पर आये कुछ शैक्षिक स्टाफ तथा कुछ अंशकालिक परामर्शदाताओं से शुरू किया। चूँकि दो प्रारंभिक पाठ्यक्रम जनवरी, 1987 में शुरू हो जाने थे और अन्य प्रस्तावित कार्यक्रमों के लिए भी सामग्री निर्माण की योजना को आगे बढ़ाना था, विश्वविद्यालय ने संगठन के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए स्टाफ की आवश्यकता को तीन बड़े वर्गों में बाँटा जैसे, शैक्षिक स्टाफ, तकनीकी स्टाफ (संपादन, अनुवाद आदि कार्यों को मिलाकर) और प्रशासनिक स्टाफ। 31 मार्च, 1987 तक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को छोड़कर विश्वविद्यालय का कुल स्टाफ दो सौ था। उस समय तक तीनों वर्गों में नियुक्त अधिकारियों का विवरण परिशिष्ट-3 में दिया गया है।

2. चयन प्रक्रिया

शैक्षिक, तकनीकी आदि स्टाफ के लिए विहित न्यूनतम योग्यताएँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं की योग्यता के अनुरूप रखी गयी। विश्वविद्यालय की संविधि में बताए अनुसार ही शैक्षिक स्टाफ की नियुक्ति की जानी थी। संविधि में विहित प्रकार से सांविधिक चयन समितियों के गठन में विलंब होने के कारण विश्वविद्यालय इन पदों को भर नहीं सका। फिर भी, आवश्यक स्टाफ के चयन में विलंब को दूर करने के उद्देश्य से जिससे कि विश्वविद्यालय के सुचारु रूप से काम करने में बाधा न हो, अखिल भारतीय स्तर पर इन पदों को विज्ञापित करने के लिए कदम उठाए गये, जिससे कि चयन समितियों के गठन के तुरन्त बाद विश्वविद्यालय चयन की प्रक्रिया प्रारंभ कर सके। इन नियुक्तियों के होने तक विश्वविद्यालय ने विविध विषयों के कुछ प्रख्यात विद्वानों को प्रतिनियुक्ति के आधार पर या अतिथि प्राध्यापक के रूप में या तदर्थ रूप में विश्वविद्यालय में आने का निमंत्रण दिया।

जैसे ही सांविधिक चयन समितियों का गठन हुआ कुछ प्रोफेसरों, रीडरों और लेक्चररों का चयन किया गया। संविधि की धारा-13 के अनुसार एक प्रोफेसर की नियुक्ति निमंत्रण द्वारा की गई।

प्रोफेसर, रीडर तथा लेक्चरर के अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने शैक्षिक सहयोगी नामक संवर्ग का सृजन किया। शैक्षिक सहयोगी के पद पर चयन भी अखिल भारतीय स्तर पर विज्ञापन के आधार पर और संविधि में लेक्चररों के चयन के लिए विहित प्रकार से गठित चयन समिति की सिफारिश से किया जाता है।

सेवारत स्टाफ का प्रशिक्षण

मुक्त शिक्षा पद्धति में कार्य करने के लिए कुछ विशिष्ट शैक्षिक और प्रशासनिक कौशलों की आवश्यकता पड़ती है। साथ एक नयी दृष्टि की भी जरूरत होती है। इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि विश्वविद्यालय में चयन किये गये या विशिष्ट कार्यों के लिए नियुक्त व्यक्तियों को सेवा के शुरू में आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाए। रिपोर्ट वर्ष के दौरान लघु अवधि के तीन विभागीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये, जिनमें से एक शैक्षिक स्टाफ के लिए और दो अन्य स्टाफ के लिए हैं। इन कार्यक्रमों में दूर शिक्षा पद्धति से सीखना, मुक्त शिक्षा पद्धति की कार्य प्रणाली, विश्वविद्यालय का प्रशासनिक ढाँचा और विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों/प्रभागों के बीच कार्य का समन्वय आदि बातों पर मुख्य रूप से बल दिया गया।

VI. शैक्षिक योजना और विकास

1. शैक्षिक कार्यक्रम

शैक्षिक स्तर पर कार्य योजना बनाने के बाद अगला कदम था शुरू के दो कार्यक्रमों को प्रारंभ करने के लिए तुरन्त आवश्यक कार्य करना और अन्य कार्यक्रमों के लिए तैयारी शुरू करने के लिए आवश्यक संगठन का विकास करना। यह सोचा गया था कि दोनों परीक्षणार्थ कार्यक्रम मुक्त शिक्षा व्यवस्था के विकास में और अन्य पाठ्यक्रमों के संचालन में आवश्यक पूर्व अनुभव प्रदान करेंगे। शुरू से ही विश्वविद्यालय ने माड्यूल पद्धति का विचार सामने रखा। ये दोनों पाठ्यक्रम भी माड्यूल के रूप में हैं। इन दोनों परीक्षणार्थ कार्यक्रमों के साथ आने वाले वर्षों में और माड्यूल जोड़े जाने थे। इस तरह विश्वविद्यालय ने आने वाले वर्षों में क्रम से कार्यक्रमों को बढ़ाने का भी विचार रखा। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों के अनुसार सामाजिक रूप से उपयोगी कार्यक्रमों को शुरू करने की दृष्टि से निम्नलिखित कार्यक्रमों की योजना बनायी गयी—अंग्रेज़ी में सृजनात्मक लेखन, विकास कार्यों से जुड़े व्यक्तियों के लिए ग्राम विकास कार्यक्रम, स्कूली शिक्षा प्राप्त छात्रों के लिए तथा शिक्षा से वंचित व्यक्तियों के लिए भी उपाधि स्तर के कार्यक्रम, भोजन और पोषण, शिशु पालन आदि सामुदायिक शिक्षा के कार्यक्रम जो महिलाओं की शिक्षा के लिए उपयोगी हैं, और पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम। परिशिष्ट-4 में तैयारी, प्रारंभ और पढ़ाई की अवधि की सूचना के साथ ऐसे पाठ्यक्रमों की सूची दी गयी है।

2. पाठ्यक्रम विकास दल

विश्वविद्यालय का प्रमुख लक्ष्य है समाज के पिछड़े वर्गों के लोगों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना। इस दृष्टि से यह योजना बनायी गयी थी कि उन्हें देश के प्रख्यात विद्वानों द्वारा तैयार की गयी उत्तम शैक्षिक सामग्री दी जाए। इसके लिए विश्वविद्यालय ने पाठ्यक्रम दल की इस संकल्पना से सामग्री के वैज्ञानिक विकास की अच्छी व्यवस्था प्रारंभ की। इस तरह यू॰ के॰ ओपन यूनिवर्सिटी की तुलना में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम दल की संकल्पना विशिष्ट है। सबसे पहले एक विशेषज्ञ समिति पाठ्यक्रम के उद्देश्यों और संरचना के बारे में विचार करती है और पाठ्यक्रम की वस्तु को खंडों और इकाइयों में बाँटती है। उसके बाद पाठ लेखक नियुक्त होते हैं जो अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ और अनुभवी विद्वान होते हैं। पाठ लेखकों का दल विशेषज्ञ समिति द्वारा प्रस्तावित रूपरेखा के अनुसार पाठ्यक्रम पर समग्र रूप से विचार करते हुए स्वयं-शिक्षण की उपयुक्त सामग्री तैयार करने की प्रक्रिया शुरू करती है। रिपोर्ट-वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय ने दोनों प्रथम परीक्षणार्थ कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम दलों की नियुक्ति की। इसी तरह से स्नातक उपाधि कार्यक्रम, भोजन और पोषण कार्यक्रम, अंग्रेज़ी में सृजनात्मक लेखन, ग्रामीण विकास आदि कार्यक्रमों के लिए 20 पाठ्यक्रम विकास दल बने और 8 विशेषज्ञ समितियों की भी नियुक्ति की गयी। हर पाठ्यक्रम दल में उस विषय के स्वरूप, संबद्ध विषयों के ज्ञान की आवश्यकता, आदि के संदर्भ में 8 से 12 सदस्य होते हैं। विश्वविद्यालय के अपने सदस्य भी उनके साथ मिलकर काम करते हैं।

3. पाठ्यक्रम दलों का प्रशिक्षण

कार्यक्रमों के लिए विशेषज्ञ तथा पाठ लेखक ज्यादातर परंपरागत विश्वविद्यालय से लिए जाते हैं और उन्हें दूर शिक्षा या मुक्त शिक्षा से अधिक परिचय नहीं होता। इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि पाठ लेखन शुरू करने से पहले सभी विद्वानों के लिए मुक्त शिक्षा पद्धति में प्रशिक्षण का 2-3 दिन का कार्यक्रम चलाया जाए। इसके अनुसार विश्वविद्यालय ने विविध कार्यक्रमों के विशेषज्ञों तथा पाठ लेखकों के लिए पाठ लेखन से पूर्व ही 23 प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये।

4. दो परीक्षणार्थ पाठ्यक्रमों का प्रारंभ

विश्वविद्यालय ने जनवरी, 1987 से दो परीक्षणार्थ कार्यक्रम शुरू करने का आश्वासन दिया था। इस वादे के अनुसार विश्वविद्यालय ने इन दोनों डिप्लोमा कार्यक्रमों के लिए सितंबर, 1986 में प्रवेश सूचना दी थी। इसके संदर्भ में आवेदन भेजने वाले सभी योग्य अभ्यार्थियों को कार्यक्रम मे प्रवेश दिया गया था। प्रबंध डिप्लोमा में 3424 छात्रों को और दूर शिक्षा के डिप्लोमा कार्यक्रम में 1104 छात्रों को प्रवेश दिया गया।

VII. क्षेत्रीय सेवाएँ

1. क्षेत्रीय केंद्रों और अध्ययन केंद्रों की स्थापना

मुक्त विश्वविद्यालय पद्धति में सामग्री निर्माण की प्रभावशाली प्रणाली के साथ-साथ अध्ययन में छात्रों को सहायता देने की व्यवस्था भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कारण विश्वविद्यालय ने क्षेत्रीय केंद्रों और अध्ययन केंद्रों की स्थापना द्वारा देश भर में छात्रों की सहायता की शृंखला स्थापित

करने के लिए कदम उठाये हैं। इस संदर्भ में दूसरे देशों की व्यवस्थाओं का भी अध्ययन किया गया और विश्वविद्यालय ने भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और भौगोलिक क्षेत्र विस्तार को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया कि अध्ययन केंद्रों का समन्वय क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय निदेशक की देखरेख में क्षेत्रीय केंद्र द्वारा किया जाना चाहिए। इस तरह भारत में हैदराबाद, लखनऊ, भुवनेश्वर और भोपाल में चार क्षेत्रीय केंद्रों और कुल 27 अध्ययन केंद्रों की स्थापना की गयी जिनकी सूची परिशिष्ट 5 में दी गयी है।

2. स्टाफ तथा उसका प्रशिक्षण

प्रारंभ में विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केंद्र स्थानीय विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और प्रादेशिक सरकारों के सहयोग से और उनसे प्राप्त स्थान आदि की सुविधा से शुरू किए गये। शुरू में सभी क्षेत्रीय निदेशक प्रदेश सरकार की संस्तुति पर प्रतिनियुक्ति पर लिए गये थे। अध्ययन केंद्रों में स्टाफ अंशकालिक तौर पर नियुक्त किया गया और जिन शिक्षा संस्थाओं में अध्ययन केंद्र खोले गये उन्हीं में से अधिकतर संयोजक लिये गये। क्षेत्रीय सेवाओं का ज़्यादातर स्टाफ भी परंपरागत शिक्षा जगत से आता है और ये विश्वविद्यालय के कार्यों और शिक्षण के तरीकों से पूरी तरह परिचित नहीं होता। इस कारण यह निर्णय लिया गया कि क्षेत्रीय केंद्रों के निदेशकों और अध्ययन केंद्रों के संयोजकों के लिए भी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस वर्ष अध्ययन केंद्रों के संयोजकों और क्षेत्रीय केंद्रों के निदेशकों और सहायक निदेशकों के लिए तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये जिनमें कुल 45 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। दो कार्यक्रम दिल्ली में हुए और एक कार्यक्रम हैदराबाद में। कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य था दूर शिक्षा की जानकारी देना तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की कार्य पद्धति तथा कार्य क्षेत्र, क्षेत्रीय केंद्रों और अध्ययन केन्द्रों के कार्य आदि से परिचित कराना।

3. परामर्शदाताओं की नियुक्ति और प्रशिक्षण

इस विश्वविद्यालय की दूर शिक्षा पद्धति में पाठ्य सामग्री अर्थात मुद्रित सामग्री, आडियो-वीडियो टेप आदि तैयार करने के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण अंग है अध्ययन केंद्रों में छात्रों को परामर्श देना और सत्रीय कार्यों की जाँच के आधार पर छात्रों को उनकी प्रगति की सूचना देना। अध्ययन केंद्रों की स्थापना के बाद आवश्यक था कि अध्ययन केंद्रों में परामर्शदाताओं की नियुक्ति की जाए और उन्हें इस पद्धति में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाए। अध्ययन केंद्रों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर 48 परामर्शदाताओं का चयन किया गया और अंशकालिक रूप से उन्हें नियुक्त किया गया। इन लोगों को भी परामर्श देने के संदर्भ में उचित प्रशिक्षण देना आवश्यक समझा गया क्योंकि ये भी परंपरागत शिक्षा पद्धति से हैं। परामर्शदाताओं के लिए दिल्ली और हैदराबाद में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये जिनमें 40 व्यक्ति उपस्थित हुए। इन्हें प्रबंध डिप्लोमा में दाखिल छात्रों को परामर्श देने के बारे में बताया गया।

VIII. समन्वय तथा स्तर निर्धारण

अधिनियम के अनुच्छेद 5(2) के अनुसार विश्वविद्यालय को ऐसे आवश्यक कदम उठाने चाहिए जिससे देश में दूर शिक्षा की व्यवस्था का विकास हो, शिक्षण के स्तर का निर्धारण हो और मुक्त शिक्षा पद्धति के मूल्यांकन और उससे संबंधित शोध कार्य हो सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय को परामर्श देने के उद्देश्य से एक समिति का गठन किया गया। उक्त समिति की सिफारिशों के आधार पर इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए कार्य करने के लिए आवश्यक संविधि तैयार करने संबंधी कदम उठाए गये।

IX. विदेशी विकास संचालन (यू० के०) सहायता

विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से ही यह अनुभव किया गया था कि विश्वविद्यालय के लिए अच्छे कार्यकर्ताओं को प्राप्त करने की दृष्टि से वरिष्ठ स्टाफ को दूर शिक्षा की संस्थाओं, विशेषकर पुरानी और सफल संस्थाओं की कार्य प्रणाली से परिचित कराना उपादेय होगा। इस दृष्टि से विदेशी विकास संचालन सहायता प्राप्त करने के यत्न किये गये। हर्ष की बात है कि विदेशी विकास संचालन ने ब्रिटिश काउंसिल के माध्यम से विश्वविद्यालय को यह सहायता देने का आश्वासन दिया।

इस सहायता कार्यक्रम के दूसरे चरण में 1986-87 में ब्रिटेन में प्रशिक्षण के लिए 30 स्थानों की व्यवस्था की गयी, 10 लोगों को छोटी अवधि की यात्रा और 15 लोगों की 2 से 4 हफ्ते तक परामर्श तथा कार्यशालाओं के लिए भारत की यात्रा की व्यवस्था हुई, और आडियो-वीडियो टेप तथा पुस्तकों के लिए राशि का प्रवधान हुआ। उक्त प्रावधान के अनुसार पुस्तकों और आडियो-वीडियो टेपों के लिए आर्डर भेजा गया है और सामग्री मिलने की प्रक्रिया चल रही है। सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत यू० के० जाने वाले व्यक्तियों तथा यू० के० से परामर्श के लिए भारत आने वाले विद्वानों की सूची परिशिष्ट-6 (अ) और (आ) में दी गयी है। यह कार्यक्रम ब्रिटिश काउंसिल की देखरेख में चल रहा है। इन कार्यों में यू० के० ओपन यूनिवर्सिटी से प्राप्त सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

X. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई संगोष्ठियाँ/अधिवेशन हुए, जिनमें विश्वविद्यालय के शैक्षिक सदस्य आमंत्रित किये गये या नामित किये गये। अपनी प्रारंभिक अवस्था में होने के कारण विश्वविद्यालय यथासंभव अपने सदस्यों को इन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन देता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवस्थाओं और प्रक्रियाओं का परिचय प्राप्त करने की दृष्टि से विश्वविद्यालय ने अपने सदस्यों को विदेशों में विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रतिनियुक्त किया। ऐसे सदस्यों की सूची परिशिष्ट-7 (अ) में दी गयी है।

विदेशी विकास सहायता कार्यक्रम के विशेषज्ञों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के कनाडा के एथाबासका यूनिवर्सिटी से दो प्रोफेसरों को पाठ्यक्रम विकास और पाठ की रूपरेखा के अभिकल्पन के संदर्भ में कार्य करने के लिए अतिथि प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया गया, जिसका विवरण परिशिष्ट-7 (आ) में दिया गया है।

XI. वित्त पोषण

विश्वविद्यालय का वित्त पोषण मुख्य रूप से शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त अनुदानों से होता है। इस वर्ष की प्राप्तियों और भुगतानों का लेखा सार रूप में निम्न प्रकार से है:

विकास योजना लेखा 1986-87
(रुपये लाखों में)

प्राप्तियाँ			**भुगतान**	
1.4.1986 को आदि शेष		2.14	पूँजीगत व्यय	198.75
भारत सरकार का सहायता अनुदान		750.00	आयगत व्यय	108.07
			जमा राशि तथा प्रेषण	3.34
			दि॰ 31.3.1987 को अंत शेष	467.83
अन्य प्राप्तियाँ				
(1) छात्रों के शुल्क	18.66			
(2) अन्य प्राप्तियाँ	4.02			
(3) जमा राशि तथा प्रेषण	3.17			
कुल		25.85		
		777.99		777.99

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

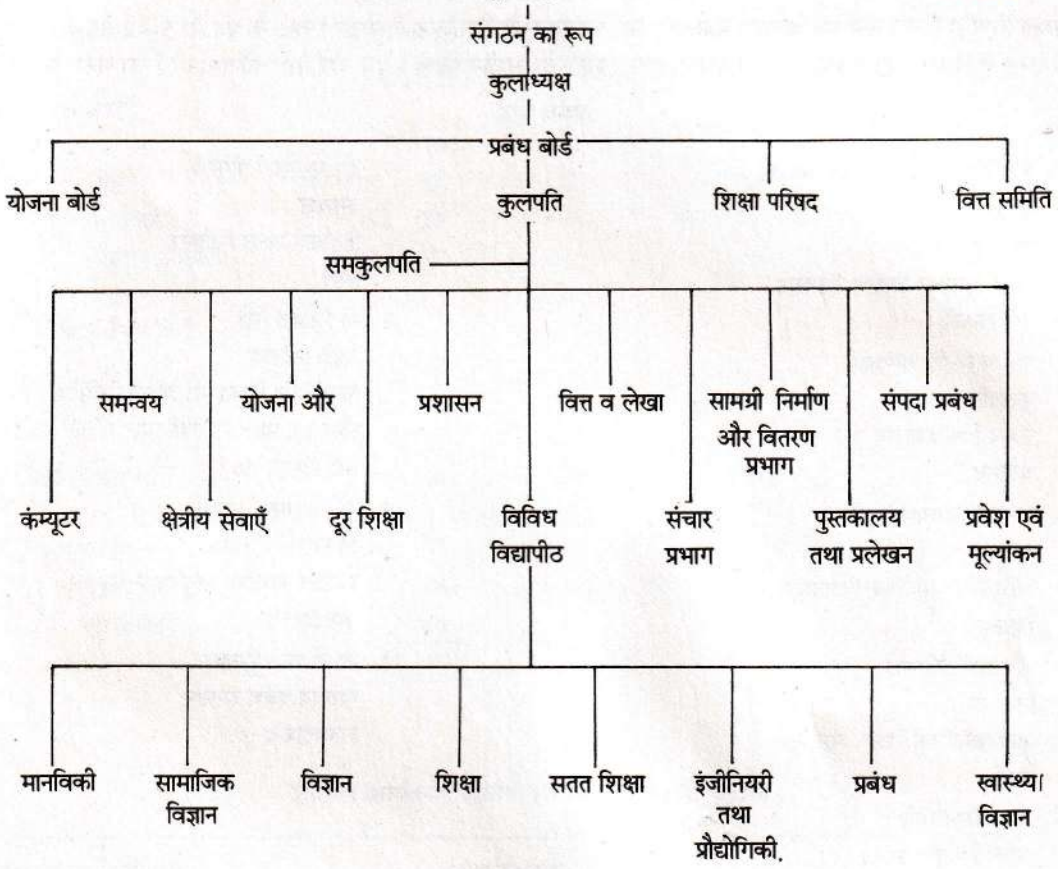

शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 8 दिसम्बर 1986 के पत्र सं॰ 5-42/85-U. 1 के अनुसार कुलाध्यक्ष द्वारा अनुभाग 39 (बी) तथा (सी) के अधीन पहले प्रबंध बोर्ड और योजना बोर्ड का गठन किया,

प्रबंध बोर्ड

1. कुलपति — पदेन अध्यक्ष
2. सचिव
   शिक्षा विभाग
   मानव संसाधन विकास मंत्रालय
   नयी दिल्ली
3. प्रो॰ आर॰ पी॰ बाम्बाह
   कुलपति
   पंजाब विश्वविद्यालय
   चंडीगढ़
4. प्रो॰ सी॰ नारायण रेड्डी
   कुलपति
   आंध्र प्रदेश सार्वत्रिक विश्वविद्यालय
   हैदराबाद
5. डॉ॰ आर्मिटी देसाई
   निदेशक
   टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान
   बंबई
6. प्रो॰ मृणाल मीरी
   आचार्य, दर्शन शास्त्र
   उत्तर पूर्व पर्वतीय विश्वविद्यालय
   शिलांग
7. डॉ॰ ए॰ एस॰ गांगुली
   अध्यक्ष
   हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड
   बंबई
8. श्री गुरुप्रीत सिंह
   प्रबंध निदेशक
   कान्टीनेंटल डिवाइसेज इंडिया लिमिटेड
   सी-120, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया
   नयी दिल्ली-28
9. डॉ॰ जे॰ एस॰ बजाज
   प्रोफेसर, चिकित्सा
   अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
   नयी दिल्ली
10. प्रो॰ रणजीत गुप्ता
    भारतीय प्रबंध संस्थान
    अहमदाबाद

योजना बोर्ड

1. कुलपति — पदेन अध्यक्ष
2. प्रो॰ ई॰ वी॰ चिटनीस
   स्पेस एप्लिकेशन रिसर्च सेंटर
   भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र
   अहमदाबाद
3. प्रो॰ एम॰ शांतप्पा
   73, तृतीय मेन रोड
   कस्तूरबा नगर , अडयार
   मद्रास
4. प्रो॰ शाहिद सिद्दीकी
   अध्यक्ष, विधि संकाय
   कश्मीर विश्वविद्यालय
   कश्मीर
5. प्रो॰ ज्योति त्रिवेदी
   कुलपति
   एस॰ एन॰ डी॰ टी॰ विश्वविद्यालय
   बंबई
6. प्रो॰ एम॰ वी॰ फैली
   मूलमट्टम
   एच॰ एम॰ टी॰ कॉलोनी
   कलमश्शेरी-683503
   केरल

परिशिष्ट-III.

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
दिनांक 31 मार्च 1987 को स्टाफ की स्थिति
(चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को छोड़कर)

अ) शैक्षिक वर्ग	
1. प्रोफेसर	09
2. रीडर	01
3. लेक्चरर	20
4. शैक्षिक सहयोगी	01
आ) प्रशासनिक वर्ग	
1. अधिकारी	32
2. अन्य कर्मचारी	100
इ) तकनीकी वर्ग	29
ई) सलाहकार	
1. पूर्णकालिक	06
2. अंशकालिक	02
कुल	200

परिशिष्ट-IV

शैक्षिक कार्यक्रमः दिनांक 31 मार्च 1987 की स्थिति

क्र॰ सं॰	शैक्षिक कार्यक्रम	प्रारंभ की तिथि
	चल रहे कार्यक्रम	
1.	प्रबंध डिप्लोमा माड्यूल-1	जनवरी 1987
2.	दूर शिक्षा में डिप्लोमा	जनवरी 1987
	चलाये जाने वाले कार्यक्रम	
1.	ग्राम विकास में डिप्लोमा	दिसंबर 1987
2.	स्नातक उपाधि कार्यक्रम (बी॰ ए॰ तथा बी॰ कॉम॰)	
	10+2 पास न करने वाले छात्रों के लिए	जनवरी 1988
	10+2 पास करने वाले छात्रों के लिए	अगस्त 1988
3.	सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा (अँग्रेजी में)	जनवरी 1988
4.	प्रबंध डिप्लोमा माड्यूल-2	अगस्त 1988
5.	भोजन और पोषण में प्रमाणपत्र	अगस्त 1988
6.	कंप्यूटर अनुप्रयोग कार्यक्रम	जनवरी 1989
7.	पुस्तकालय विज्ञान एवं सूचना विज्ञान में उपाधि	जनवरी 1989

अन्य शैक्षिक कार्यक्रम जो प्रस्तावित हैं

1. प्रबंध डिप्लोमा माड्यूल-3
2. बी॰ एस-सी॰
3. प्रबंध डिप्लोमा माड्यूल-4
4. ग्राम विकास में डिप्लोमा
5. भोजन और पोषण में डिप्लोमा
6. शिशु पालन में डिप्लोमा
7. दूर शिक्षा में उच्च डिप्लोमा
9. उंच्च शिक्षा में डिप्लोमा

दिनांक 31.3.87 तक स्थापित क्षेत्रीय केंद्र तथा अध्ययन केंद्र

क्षेत्रीय केंद्र

1. हैदराबाद
2. लखनऊ
3. भुवनेश्वर
4. भोपाल

अध्ययन केन्द्र

आंध्र प्रदेश
हैदराबाद
तिरुपति

असम
गुवाहटी

बिहार
पटना

चंडीगढ़
चंडीगढ़

दिल्ली
शिवाजी कॉलेज
विश्व युवक केंद्र
श्री वेंकटेश्वर कॉलेज

गोवा
मडगाँव

गुजरात
अहमदाबाद

हरियाणा
कुरूक्षेत्र

हिमाचल प्रदेश
शिमला

कर्नाटक
बंगलूर

केरल
त्रिवेंद्रम

मध्य प्रदेश
भोपाल
जबलपुर

महाराष्ट्र
बंबई-1

मणिपुर
इम्फाल

मेघालय
शिलांग

उड़ीसा
भुवनेश्वर

राजस्थान
जयपुर

तमिलनाडु
मद्रास-1

उत्तर प्रदेश
लखनऊ
आगरा
इलाहाबाद

पश्चिम बंगाल
कलकत्ता-1

कार्यक्रम
विदेशी विकास सहायता कार्यक्रम (यू॰ के॰) के अंतर्गत इंग्लैंड (यू॰ के॰) जाने वाले विश्वविद्यालय के अधिकारियों की सूची

क्र॰ सं॰	नाम तथा पद	अवधि	प्रयोजन
1.	श्रीमती प्रभा चावला संयुक्त निदेशक	6.4.86 से 26.7.86	विकासशील देशों में दूर शिक्षा पर आयोजित पाठ्यक्रम में भाग लेने
2.	प्रो॰ बी॰ एस॰ शर्मा सम कुलपति	21.4.86 से 5.5.86	यू॰ के॰ ओपन यूनिवर्सिटी के संगठन तथा प्रबंध के पाठ्यक्रम का निरीक्षण
3.	मेजर जनरल जी॰ एस॰ विर्क (सेवानिवृत) कुलसचिव (एम॰ पी॰ डी॰ डी॰)	20.9.86 से 10.10.86	यू॰ के॰ ओपन यूनिवर्सिटी की कार्य पद्धति का अध्ययन
4.	डॉ॰ ए॰ डब्ल्यू॰ खान मुख्य परामर्शदाता	20.9.86 से 4.10.86	यू॰ के॰ ओपन यूनिवर्सिटी की कार्य पद्धति का अध्ययन
5.	प्रो॰ बख्शीश सिंह	24.11.86 से 18.12.86	यू॰ के॰ ओपन यूनिवर्सिटी में विभिन्न पाठ्यक्रमों का विकास प्रशासन, परीक्षा पद्धति आदि का निरीक्षण
6.	डॉ॰ (श्रीमती) शक्ति अहमद	25.2.87 से 28.3.87	यू॰ के॰ ओ॰ यू॰ के स्नातक उपाधि कार्यक्रम के शैक्षिक तथा प्रशासनिक पहलुओं का अध्ययन

7.	श्री एस॰ सी॰ वाजपेयी सम कुलपति	14.3.87 से 26.3.87	यू॰ के॰ ओ॰ यू॰ द्वारा विभिन्न पाठ्यक्रमों के विकास के लिए प्रयुक्त प्रशासनिक के साथ स्टूडियो, शिक्षा प्रविधि के प्रशासनिक पक्ष का अध्ययन
8.	प्रो॰ सुरेंद्र शर्मा प्रोफेशनल सलाहकार	14.3.87 से 28.3.87	मिल्टन केन्स के ओपन यूनिवर्सिटी परिसर के अभिन्यास और भवनों के वास्तु विन्यास का अध्ययन
9.	डा॰ पी॰ सत्यनारायण क्षेत्रीय निदेशक	29.3.87 से 19.4.87	यू॰ के॰ ओपन यूनिवर्सिटी के क्षेत्रीय केंद्रों के गठन का अध्ययन

विदेशी विकास सहायता कार्यक्रम (यू॰ के॰) के अंतर्गत विश्वविद्यालय से आये यू॰ के॰ के परामर्शदाता

क्र॰ सं॰	नाम तथा पद	आगमन का समय	प्रयोजन
1.	श्री कीथ हार्डिंग सदस्य, रॉयल इन्स्टीट्यूट ऑफ ब्रिटिश आर्किटेक्ट्स	मई, 1986	सामान्य परामर्श
2.	श्री टोनी बोरी प्रोजेक्ट मैनेजर बी॰ बी॰ सी॰	सितंबर, 1986	संचार प्रभाग के लिए परामर्श
3.	डॉ॰ जे॰ रैडक्लिफ अध्यक्ष बी॰ बी॰ सी॰ प्रोडक्शन सेंटर यू॰ के॰ ओ॰ यू॰	सितंबर, 1986	संचार प्रभाग के लिए परामर्श
4.	सुश्री जेनेट जेन्किन्स निदेशक इन्टरनेशनल एक्सटेन्शन कॉलेज लंदन, यू॰ के॰	मार्च, 1987	दूर शिक्षा प्रभाग के लिए परामर्श
5.	श्री ब्रायन रैम्सडेन सचिव, क्षेत्रीय शैक्षिक सेवाएँ यू॰ के॰ ओ॰ यू॰	मार्च, 1987	क्षेत्रीय सेवा संबंधी परामर्श
6.	सुश्री पेगोटी ग्रहाम स्टाफ ट्यूटर आक्सफर्ड क्षेत्रीय केंद्र यू॰ के॰ ओ॰ यू॰	मार्च, 1987	क्षेत्रीय सेवा संबंधी परामर्श
7.	श्री फिलिप टर्नर निदेशक यूरोग्राफिक लिमिटेड हल, इंग्लैंड	मार्च, 1987	सामग्री निर्माण तथा वितरण प्रभाग में परामर्श के लिए

परिशिष्ट VII (अ)

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/अधिवेशनों में भाग लेने वाले या विदेशी विकास सहायता कार्यक्रम के अतिरिक्त अन्य देशों की स्थिति से परिचय के लिए विदेश भेजे गये विद्वानों की सूची

क्र॰ सं॰	नाम तथा पद	कहाँ की यात्रा की	यात्रा की अवधि	यात्रा का प्रयोजन
1.	प्रो॰ जी॰ राम रेड्डी कुलपति	लंदन-वैनकुवर एड्मटंन-वैनकुवर तोक्यो-बैंकॉक	23.5.86 से 7.6.86	कॉमनवेल्थ सचिवालय, लंदन द्वारा आयोजित ''दूर शिक्षा में कॉमनवेल्थ सहयोग'' शीर्षक अधिवेशन में भाग लेना
2.	प्रो॰ जी॰ राम रेड्डी कुलपति	बैंकॉक-मलेशिया पीनांग-कोलालंपुर	15.8.86 से 23.8.86	कॉमनवेल्थ विश्वविद्यालय संगठन के शासी प्रधानों के अधिवेशन में भाग लेना
3.	प्रो॰ बी॰ एन॰ कौल निदेशक, दूर शिक्षा	पाकिस्तान	8.7.86 से 10.7.86	ओपन यूनिवर्सिटी का अध्ययन
4.	श्री पी॰ सत्यनारायण संयुक्त निदेशक	पाकिस्तान	8.7.86 से 10.7.86	ओपन यूनिवर्सिटी का अध्ययन
5.	मेजर जनरल जी॰ एस॰ विर्क (सेवानिवृत्त) कुलसचिव (एम॰ पी॰ डी॰ डी॰)	थाइलैंड	27.7.86 से 4.8.86	अध्ययन यात्रा
6.	श्री एस॰ सी॰ वाजपेयी सम कुलपति	थाइलैंड	2.9.86 से 18.9.86	अध्ययन यात्रा
7.	प्रो॰ सुरेन्द्र शर्मा प्रोफ़ेशनल सलाहकार	थाइलैंड	2.9.86 से 18.9.86	अध्ययन यात्रा
8.	श्रीमती प्रभा चावला संयुक्त निदेशक	बैंकॉक-सिडनी ब्रिस्बेन	26.11.86 से 7.12.86	अध्ययन यात्रा तथा शोध पत्र प्रस्तुत करना
9.	मेजर जनरल जी॰ एस॰ विर्क (सेवानिवृत्त) कुलसचिव (एम॰ पी॰ डी॰ डी॰)	बैंकॉक	19.3.87 से 23.3.87	अध्ययन यात्रा
10.	प्रो॰ बी॰ एस॰ शर्मा समकुलपति	बैंकॉक	22.3.87 से 3.4.87	दूर शिक्षा से सीखने-सिखाने की नयी पद्धतियों पर आयोजित दूसरे अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन में आधार पत्र प्रस्तुत करना

परिशिष्ट -VII (आ)

अतिथि प्रोफेसर के रूप में आये विदेशी विद्वान

क्र॰ सं॰	नाम तथा पद	अवधि	प्रयोजन
1.	डॉ॰ दीपक सरस्वती प्रोफेसर एथाबासका विश्वविद्यालय कनाडा	6.10.88 से 18.12.88	पाठ्यक्रम विकास तथा पाठ संरचना के अभिकल्प के लिए अतिथि प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित
2.	डॉ॰ टी॰ एस॰ बख्शी प्रोफेसर एथाबासका विश्वविद्यालय कनाडा	2.9.86 से दिसंबर 86	पाठ्यक्रम विकास तथा पाठ संरचना के अभिकल्प के लिए अतिथि प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित

CONTENTS

		Page
I	Introduction	16
II	Organisational Structure	16
III	Authorities of the University	17
IV	Development of Physical Facilities	17
V	Staff Appointments	18
VI	Academic Planning and Development	19
VII	Regional Services	20
VIII	Coordination and Maintenance of Standards	21
IX	Overseas Development Administration (U.K.) Assistance	21
X	International Interaction	21
XI	Funding	21
	Annexures	22-28

I INTRODUCTION

1. The Indira Gandhi National Open University (IGNOU), established in September 1985 by an Act of Parliament, seeks to advance and disseminate learning and knowledge by a diversity of means. Primarily it aims at providing opportunities for higher education to those segments of Indian population, who, for a variety of reasons, could not have access to conventional institutes of higher learning.

2. To fulfil its objects through the diverse means of distance and continuing education, IGNOU shall function in co-operation with the existing Universities and Institutions of Higher Learning and make full use of the latest scientific knowledge and new educational technology to offer high quality education which matches contemporary needs. In a broader sense IGNOU seeks to endeavour through educational research, training and extension to play a positive role in the development of the country. The most innovative and significant features of the University are: relaxed entry rules; study according to the student's own pace and convenience; flexibility in choosing the combination of courses from a wide range of disciplines; study from the student's own chosen place; and the use of modern educational and communication technology.

3. As already reported in the Annual Report of 1985-86, in its first year of existence, besides acquisition of land and launching of the University by the Prime Minister on November 19, 1985, the University, in order to be functional, mainly concentrated on the development of minimum physical facilities related to hired office accommodation, provision of a faculty hostel and residential accommodation in a way that it was able to attract the required kind of personnel.

4. During 1986-87, the University devoted its efforts to task identification, evolution of academic strategy, concretisation of academic packages and programmes to be initiated immediately and a perspective about programmes and facilities to be developed in future years. Viewed thus the first six months of the year mark the period when ground was prepared to concentrate upon the preparation of the two pilot academic programmes to be launched in January, 1987. With augmentation of further physical facilities and increased recruitment of the requisite type of personnel and organisational inputs, efforts may proceed smoothly in future to initiate more academic activities.

II ORGANISATIONAL STRUCTURE

Keeping in view the tasks to be performed by the University, an academic strategy was evolved in the year under report. It was visualised that in operational terms, the ultimate success of the University will depend upon the viability and effective functioning of the critical systems such as material development (print, audio and video), material production and delivery. These systems, in turn, would inevitably call for evolution and setting up of a suitable organisational structure. The organisational structure should ensure effective administrative coordination, operational flexibility and requisite response to experimentation and required innovation. The University constituted a Task Force headed by the Vice-Chancellor which examined the administrative and organisational structures of various open universities abroad, more particularly, U.K. Open University, Sukhothai Thammathirat Open University, Thailand, Alama Iqbal University, Pakistan and a few others. Considering the specific Indian conditions, and the tasks set before the University in the Act, the organisational structure was evolved as given in Annexure-I. It was felt that this 'Organisational Structure' would become operational; and, after giving a fair trial for at least three years, it would be reviewed and changes could be made, wherever necessary.

Organisational Structure, thus evolved, facilitated responsibility allocation, time estimations of various activities and concretisation of the nature of personnel to be recruited in a phased manner.

III AUTHORITIES OF THE UNIVERSITY

1. Constitution of the First Board of Management and the First Planning Board

Activities proceeded in accordance with the Organisational Structure. In the mean time, in exercise of the powers vested in him under Section 39 (b) and (c) of the Indira Gandhi National Open University Act, 1985, the President, in his capacity as the Vistor of the University, constituted the first Board of Management and the first Planning Board of the University w.e.f. 8th December, 1986 (vide Government of India letter no. 5-42/85.U.1 dated 8th December, 1986). The constitution of the first Board of Management and the first Planning Board is given in Annexure-II. The Planning Board also functions as Academic Council till such time that the Academic Council is constituted through a Statute.

2. Meetings of the Boards

After the constitution of these two authorities of the University, process was also initiated to constitute the other authorities, namely, Academic Council, Schools of Studies and Finance Committee. The Board of Management held two meetings, the first in January and the second in March 1987 while the Planning Board met in March 1987. In the two meetings of the Board of Management, it noted the progress made by the University since its inception and the appointments of the first Registrars and the Finance Officer made by the Visitor. In addition the issues related to the development of the campus, recruitment of teachers and other academic personnel were deliberated on. The financial estimates for 1987-88 were reviewed and approved, and a framework of Delegation of Financial Powers in the coming year was evolved. The Planning Board, in its first meeting, noted the progress made by the University and deliberated considerably on the academic strategy of the University, the details of the two pilot programmes, i.e. Diplomas in Management and Distance Education and the general considerations required in evolving and launching of under-graduate and other academic programmes.

3. Schools and Divisions

The Board of Management initially agreed to the creation of the following Schools of Studies:

1. School of Management Studies
2. School of Humanities
3. School of Social Sciences
4. School of Sciences
5. School of Adult and Continuing Education
6. School of Education

In addition, to promote human resource development for the distance education system, staff training and student support, printing and publication of materials, production of audio-video lessons, and looking after admissions and examinations, five divisions, namely, Division of Distance Education, Division of Regional Services, Division of Material Production and Publication and Distribution, Division of Communication and Division of Admissions and Evaluation were set up. Efforts were also initiated to organise the Computer Service Division.

IV DEVELOPMENT OF PHYSICAL FACILITIES

1. Hiring of Accommodation

As mentioned in the first Annual Report, the University had acquired land in Maidan Garhi village for its permanent campus. For the immediate functioning, it hired three buildings – one at YMCA

Cultural Centre, one at Sarvapriya Vihar and one at Hauz Khas – for office accommodation and faculty hostel. Keeping in view the fact that the University was to launch in January, 1987, two diploma programmes and initiate and accelerate the process of development of materials for Rural Development, Under-graduate and Women's Education Programmes, it was visualised that more office accommodation would be needed. Furthermore recruitment was to be made and the expert committees were to be constituted. Accordingly, it acquired three more locations – YMCA 4th Floor, the second at Safdarjung Development Area and the third at Tughlakabad Institutional Area. This was further necessitated by the fact that facilities for audio-video production, computing and library services were to be quickly created.

2. National Architectural Competition for Permanent Campus

The task of developing a permanent campus on the allotted site has been engaging the attention of the University since its inception. The main concern was to ensure that the University Complex presents a consistency and harmony of architectural style befitting its unique role. To advise the University, a Building Committee consisting of educationists, architects, representatives of Urban Art Commission, School of Planning and Architecture and CPWD was constituted. A Professional Advisor was also appointed to coordinate its work. As a result of the work of the Committee, a plan for two stage National Architectural Competition was prepared. There has been delay in finalizing the selection of the architect, mainly due to some delay in fulfilling certain technicalities to be followed for the use of land allotted to the university. However, the preliminary work such as sinking of tube wells and planting of trees has been initiated on the basis of deposit work through Delhi Administration.

3. Temporary Structures

Since the permanent construction was likely to take longer time and also the fact that the hired accommodation was costly and the payback period for recoupment of investment in temporary structures was small, the University initiated the process of having some semi-permanent structures which can be constructed quickly at the site. Negotiations were started with governmental construction agencies for preparation of the drawings for the temporary structures covering 80,000 sq. ft.

V STAFF APPOINTMENTS

1. Staff Position

In the first year, after the appointment of the Vice-Chancellor, the University started functioning with a Pro-Vice-Chancellor and a few academic staff on deputation and a few part-time consultants. Since the two pilot programmes were to be launched in January, 1987, and also the process for preparing materials for other academic programmes was to be augmented, the University, keeping in view the organisational structure, estimated its requirements in three broad categories, namely, teaching (academic) staff, technical staff (editorial and translation work included) and administrative staff. By 31st March, 1987, excluding Group D employees, the total staff was 200. The details of the various categories of personnel appointed are given in Annexure-III.

2. Manner of Recruitment

Qualifications, prescribed for academic, technical and other types of staff, were substantially the same as those prescribed by the University Grants Commission and Central Universities and other Institutions of Higher Learning. Appointments of the required academic staff were to be made in accordance with the provision of the statutes. Since there was delay in constituting the statutory

selection committees as prescribed in the statutes, the University could not fill these posts as per the provision of the statutes. However, in order to avoid further delay in recruiting the core staff, which was necessary for the efficient working of the University, steps had been taken to advertise the posts on all India basis so that as soon as the selection committees were constituted the University could be in a position to recruit the persons. In the absence of such appointments the University had selected a few persons known for their eminence and requested them to join the University on deputation or as visiting faculty or on ad hoc basis till the regular appointments were made.

As soon as the Statutory Selection Committees were constituted, selections of some Professors, Readers and Lecturers were made. One appointment, that of a Professor, was made by invitation as provided in Statute 13 of the Statutes.

The University had, in addition to the posts of Professors, Readers and Lecturers, also created a cadre of Academic Associates. The recruitment to these posts is being made through advertisements on an All India basis and on the recommendations of selection committees constituted as prescribed for lecturers in the statute.

3. Induction Training

Since open education system needs distinctive emphasis in terms of academic and administrative skills and orientation, it was thought desirable to give induction training to all the categories of personnel recruited or hired for specific purposes. During the year under report, 3 in-house programmes of short duration were organised of which one was meant for academic personnel and two related to non-academic personnel. In these programmes, basic emphasis centred around the familiarity with distance mode of learning, features of open education system, administrative structures of the University and operating linkages between different units/divisions.

VI ACADEMIC PLANNING AND DEVELOPMENT

1. Academic Programme

Having evolved the academic strategy, immediate task was to gear the system to cater to the immediate requirements of the launching of the two pilot programmes and developing the organisation which could take care of the preparations for starting other programmes. It was visualised that the operation of the two pilot programmes would provide necessary experience for 'system development' and course delivery. Right from the beginning, the University worked along the concept of modular approach. These two pilot programmes were accordingly to be in modular form. In addition to these pilot programmes and their subsequent modules, the University decided to increase its offerings in the coming years. With a view to launching the programmes which would become socially relevant and serve the purposes for which the University has been established, packages were prepared to offer the following programmes; Creative Writing in English, Rural Development Programme for Development Functionaries, Degree Programmes for both those who have passed 10 + 2 and those who did not have any formal qualifications, Community Education Programmes like Food, Nutrition and Child Care in the area of Women's Education, and Library and Information Science. A list of such courses along with the time estimation in preparation, launching and instruction is given in Annexure-IV.

2. Course Development Teams

Since one of the important objectives of the University is to cater to the educational needs of more disadvantaged groups of the society, it was visualized that they may be provided with the best educational material prepared by the best available experts in the country. The University evolved a system of material development through the concept of Course Teams. Unlike the UKOU, the course

team concept of IGNOU is unique. At the first stage, an expert committee appointed decides the focus and structure of the course contents of a programme including the work of putting it into blocks and units. Subsequently, a team of course writers comprising academic experts in the discipline, and persons having expertise in educational technology and communication, take up the task of developing the material. These teams discuss all aspects of the unitization work done by the expert committee and evolve their own mechanism to develop the self-learning materials. During the year under report, the University appointed 9 course teams for the two pilot programmes, 20 course teams and 8 expert committees for various other courses which included Bachelor's Degree Programme, Food and Nutrition Programme, Creative Writing in English and Rural Development Programme. Each course team, depending upon the nature of the discipline and interdisciplinary requirements, consisted of 8 to 12 members, along with the internal members of the faculty.

3. Orientation of Course Team

Since most of the expert-cum-course writers are drawn from the formal sector who may not necessarily be familiar with distance and open learning system, it was thought appropriate that before the work of course writing starts, each of them should undergo at least two to three days orientation. Accordingly, the University organised 23 such orientation programmes for the expert-cum-course writers before actual work of writing started.

4. Launching of the Pilot Programmes

The University had committed to launch the first two pilot programmes in January, 1987. The University gave admission notice for these two diploma programmes in September, 1986. All those who applied and fulfilled the admission requirements notified were admitted. 3424 students were admitted to Diploma in Management and 1104 students to Diploma in Distance Education.

VII REGIONAL SERVICES

1. Establishment of Regional and Study Centres

In open education system, besides viable and effective material production sub-systems, the critical factor is a very strong and efficient student support sub-system. Accordingly the University took steps to establish a nucleus of student support services by way of establishing Regional and Study Centres. Experience in other countries was also studied but looking to the socio-economic conditions and the geographical features of the country, the University decided to have strong study centres to be co-ordinated by a Regional Director at the Regional Centre. Four Regional Centres at Hyderabad, Lucknow, Bhubaneshwar and Bhopal and 27 Study Centres in various parts of the country were set up. List of Regional and Study Centres established as on 31.3.1987 is given in Annexure-V.

2. Staffing and Training of Personnel

Since the Regional Centres were started with the co-operation and courtesy of Universities, Colleges, State Governments for provision of physical facilities, initially all the Regional Directors were taken on deputation on the recommendation of the State Government concerned. At the Study Centres most of the staff was taken on part-time basis as co-ordinators largely belonging to the educational institutions where the Centres were located. Since most of these personnel belonged to the formal sector and the fact they were not fully familiar with the tasks involved and the activities to work through, it was decided to organise orientation programmes both for the Directors of Regional Centres and the Co-ordinators of Study Centres. During the year, three orientation programmes were organized for Co-ordinators of the Study Centres, Assistant Directors and Regional Directors posted in the Regional Centres. Two such programmes were organised at the headquarters and one at Hyderabad. In all 45

persons were trained. The basic training component centred around familiarity with distance learning, tasks of IGNOU, responsibilities of Regional Centres and Co-ordinators in Study Centres.

3. Appointments and Training of Counsellors

Apart from the use of multi-media package i.e. supply of print material, use of audio-video cassettes, an important factor in Distance Education is feedback on assignments and counselling at Study Centres. Having set up the Study Centres, it was important that the University appoints counsellors and also trains them so that the system functions effectively. Through a quick survey of the personnel available in the vicinity of the Study Centres, 48 counsellors were selected and appointed on job basis. Since they come from formal sector, it was thought desirable to give them appropriate orientation so that they could appreciate their roles. Two training programmes were organised-one at Delhi and the other at Hyderabad in which 40 Counsellors were trained for counselling of students enrolled for the Diploma in Management.

VIII COORDINATION AND MAINTENANCE OF STANDARDS

Section 5 (2) of the Act provides that the University to take all such steps as it may deem fit for the promotion of the open university and distance education systems and for the determination of standards of teaching, evaluation and research in such systems. In pursuance of this, a Committee was set up to recommend steps which the University may take to fulfil this obligation on its part. On the basis of the recommendation of the Committee, steps were initiated to frame necessary statutes to enable the University to perform these functions.

IX OVERSEAS DEVELOPMENT ADMINISTRATION (U.K.) ASSISTANCE

Right from the inception of the University, it was visualised that exposure to distance education institutions, particularly those which are successful would be critical for the senior level personnel of IGNOU. Keeping this in view efforts were made to seek the ODA assistance. Happily, the ODA agreed to provide this assistance through the British Council.

The second phase of this assistance provided 30 slots for Training in Britain for 1986-87, 10 short visits, 15 (2-4 weeks) consultancy and workshop visits in India and provision of funds for audio-video tapes and books. Orders for books and audio-video tapes, as per allocations, were placed which are in the process of supply. A list of persons who visited U.K. and the consultants who visited India from U.K. under this programme is given in Annexure-VI (a) and (b). This programme is operated through British Council. In all these areas the help given by the U.K.O.U., was invaluable.

X INTERNATIONAL INTERACTION

There have been various international conferences/seminars for which University academic personnel were invited or nominated. The University, being in the initial stage, to the extent possible, encouraged participation by its staff. In addition, with a view to getting familiar with various systems and processes, the university also deputed persons abroad for specified purpose. A list of such persons is given in Annexure-VII (a).

Besides the ODA experts, the University invited two Professors from Athabasca University, Canada as Visiting Professors for participation in course development and format designing. The names of these two professors are given in Annexure-VII (b).

XI FUNDING

The University is mainly financed from the grants given by Department of Education, Ministry of Human Resource Development, Government of India. The summarised receipts and payments

account of the University for the period is indicated below:

Development Plan Account 1986-87
(in lakhs of rupees)

RECEIPTS			PAYMENTS	
Opening Balance as on 1.4.1986		2.14	Capital expenditure	198.75
Grant in aid from Govt. of India		750.00	Revenue expenditure	108.07
Other Receipts			Deposits & remittances	3.34
(1) Fee from Students	18.66		Closing balance as on 31.3.1987	467.83
(2) Other receipts	4.02			
(3) Deposits & remittances	3.17	25.85		
		777.99		777.99

ANNEXURE-I

THE INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY
ORGANISATIONAL STRUCTURE

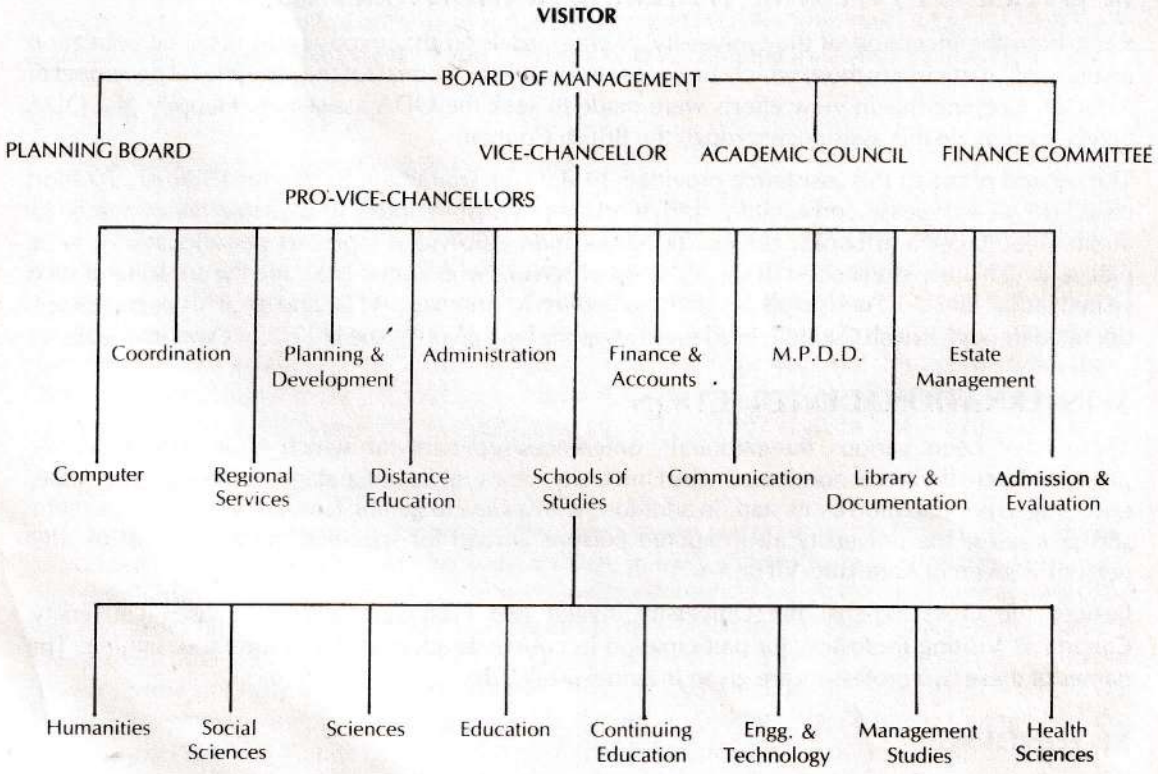

ANNEXURE-II

First Board of Management and First Planning Board constituted under Section 39 (b) & (c) of the Act by the Visitor vide letter No. 5-42/85-U.1, dt. 8 December, 1986 of the Government of India, Ministry of Human Resource Development, Department of Education, New Delhi.

BOARD OF MANAGEMENT

1. Vice-Chancellor — Chairman, Ex-Officio
2. Secretary
   Department of Education
   Ministry of Human Resource Development
   New Delhi
3. Secretary
   Ministry of Information and Broadcasting
   New Delhi
4. Prof. R.P. Bambah
   Vice-Chancellor
   Panjab University
   Chandigarh
5. Prof. C. Narayana Reddy
   Vice-Chancellor
   Andhra Pradesh Open University
   Hyderabad
6. Dr. Armity Desai
   Director
   Tata Institute of Social Sciences
   Bombay
7. Prof. Mrinal Miri
   Professor of Philosophy
   North-Eastern Hill University
   Shillong
8. Dr. A. S. Ganguli
   Chairman
   Hindustan Lever Limited
   Bombay
9. Shri Gurprit Singh
   Managing Director
   Continental Devices India Ltd.
   C-120, Naraina Industrial Area
   New Delhi-28
10. Dr. J.S. Bajaj
    Professor of Medicine
    All India Institute of Medical Sciences
    New Delhi
11. Prof. Ranjit Gupta
    Indian Institute of Management
    Ahmedabad

PLANNING BOARD

1. Vice-Chancellor — Chairman, Ex-Officio
2. Prof. E.V. Chitnis
   Space Application Research Centre
   Indian Space Research Organisation
   Ahmedabad
3. Prof. M. Santappa
   73, III Main Road
   Kasturba Nagar
   Adyar
   Madras-600020
4. Prof. Shahid Siddiqui
   Dean of Law
   Kashmir University
   Srinagar
   Kashmir
5. Prof. Jyothi Trivedi
   Vice-Chancellor
   S.N.D.T. University
   Bombay
6. Prof. M.V. Pylee
   Moolamattom
   H.M.T. Colony
   Kalamassery-683503
   Kerala

ANNEXURE-III

THE INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Staff position as on 31st March, 1987
(excluding Group D employees)

A. ACADEMIC		
1.	Professors	09
2.	Readers	01
3.	Lecturers	20
4.	Academic Associates	01
B. ADMINISTRATION		
1.	Officers	32
2.	Secretarial & Supporting staff	100
C. TECHNICAL		29
D. CONSULTANTS		
1.	Full-time	06
2.	Part-time	02
	Total	200

ANNEXURE-IV

ACADEMIC PROGRAMMES AS ON 31st MARCH 1987

S.No.	ACADEMIC PROGRAMMES	DATE OF COMMENCEMENT
ONGOING PROGRAMMES		
1.	Diploma in Management Module-I	January 1987
2.	Diploma in Distance Education	January 1987
PROGRAMMES TO BE LAUNCHED		
1.	Certificate in Rural Development	December 1987
2.	Under Graduate (B.A. & B.Com.)	
	Non-10+2 Stream	January 1988
	10+2 Stream	August 1988
3.	Diploma in Creative Writing (English)	January 1988
4.	Diploma in Management Module-II	August 1988
5.	Certificate in Food & Nutrition	August 1988
6.	Programmes in Computer Applications	January 1989
7.	Bachelor in Library & Information Science	January 1989

ANNEXURE-IV (Contd.)

ACADEMIC PROGRAMMES UNDER PREPARATION

1. Diploma in Management Module-III
2. Bachelor in Science (B.Sc.)
3. Diploma in Management Module-IV
4. Diploma in Rural Development
5. Diploma in Food & Nutrition
6. Diploma in Child Care
7. Advanced Diploma in Distance Education
8. Diploma in Creative Writing (Hindi)
9. Diploma in Higher Education

ANNEXURE-V

REGIONAL CENTRES/STUDY CENTRES OPENED UPTO 31st MARCH 1987

REGIONAL CENTRES	STUDY CENTRES		
1. Hyderabad	A.P.	HARYANA	MEGHALAYA
2. Lucknow	Hyderabad	Kurukshetra	Shillong
3. Bhubaneshwar	Tirupati	H.P.	ORISSA
4. Bhopal	ASSAM	Shimla	Bhubaneshwar
	Gauhati	J & K	RAJASTHAN
	BIHAR	Jammu Tawi	Jaipur
	Patna	KARNATAKA	TAMIL NADU
	U.T. CHANDIGARH	Bangalore	Madras-I
	Chandigarh	KERALA	U.P.
	DELHI	Trivandrum	Lucknow
	Shivaji College	M.P.	Agra
	V.Y.K., Chanakyapuri	Bhopal	Allahabad
	S.V. College	Jabalpur	WEST BENGAL
	GOA	MAHARASHTRA	Calcutta-I
	Margoa	Bombay-I	
	GUJARAT	MANIPUR	
	Ahmedabad	Imphal	

ANNEXURE-VI (a)

LIST OF THE INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY STAFF WHO VISITED UK UNDER ODA PROGRAMME

S.No.	NAME	PERIOD	PURPOSE
1.	Mrs. Prabha Chawla Jt. Director Women's Studies	6.4.86 to 26.7.86	To undertake a course of instruction in Distance Education Teaching in Developing countries
2.	Prof. B.S. Sharma Pro-Vice-Chancellor	21.4.86 to 5.5.1986	To study the organisation of UK Open University and Course in Management
3.	Maj. Gen. G.S. Wirk (Retd.) Registrar (MPDD)	20.9.1986 to 10.10.1986	To visit Open University in UK and study their functional aspects
4.	Dr. A.W. Khan Chief Consultant	20.9.1986 to 4.10.1986	To visit Open University in UK to study its functional aspects
5.	Prof. Bakhshish Singh	24.11.86 to 18.12.1986	To study the development of various courses, administration, examination system etc. of the Open University, UK
6.	Dr. (Mrs.) Shakti R. Ahmed	25.2.1987 to 28.3.1987	To study the administrative and academic work related to the organisation of Bachelor Degree Programme of the Open University, UK
7.	Shri S.C. Vajpeyi Pro-Vice-Chancellor	14.3.1987 to 28.3.1987	To study general administration and various courses as also the studios, development of educational technology of the administrative aspects for the development of different courses adopted by Open University in UK
8.	Prof. Surendra Sharma Professional Adviser	14.3.1987 to 28.3.1987	To study the lay-out and architectural design of the various buildings of the Open University at Milton Keynes.
9.	Dr. P. Satyanarayana Regional Director	29.3.1987 to 19.4.1987	To study the set-up of Regional Centres under UK Open University

ANNEXURE-VI(b)

U.K. CONSULTANTS WHO VISITED IGNOU UNDER ODA COOPERATION

S.No.	NAME	MONTH OF VISIT	PURPOSE
1.	Mr. Keith Harding Member, Royal Institute of British Architects	May 86	Consultancy (General)
2	Mr. Tony Bery Project Manager, B.B.C.	Sept. 86	Consultancy in Communication Division
3	Dr. J. Radcliffe Head, BBC Production Centre, UKOU	Sept. 86	–do–
4	Ms. Janet Jenkins Director International Extension College, London, UK	March 87	Consultancy in Distance Education Division
5	Mr. Brian Ramsden Regional Academic Service Secretary UK Open University	March 87	Consultancy in Regional Services
6	Ms. Pegotty Graham Staff Tutor Oxford Regional Centre UK Open University	March 87	–do–
7	Mr. Philip Turner Director Eurographic Ltd. Hull, England	March 87	Consultancy in Material Production & Distribution Division

ANNEXURE-VII (a)

LIST OF PERSONS WHO ATTENDED CONFERENCES/SEMINARS OR WERE SENT ABROAD BY THE UNIVERSITY FOR FAMILIARISATION TO COUNTRIES OTHER THAN THE ODA PROGRAMME

S.No.	NAME & DESIGNATION	PLACE VISITED	PERIOD OF VISIT WITH DATE	PURPOSE OF VISIT
1.	Prof. G. Ram Reddy Vice-Chancellor	London-Vancouver Edmonton-Vancouver Tokyo-Bangkok	23rd May to 7th June 1986	To attend the Conference of Commonwealth Co-operation in Open and Distance Learning convened by the Commonwealth Secretariat, London.
2.	–do–	Bangkok-Malaysia Penang-Kualalampur	15-23 Aug. 1986	To attend the Executive Heads Conference of the Association of Commonwealth Universities.
3.	Prof. B.N. Koul Director Distance Education	Pakistan	8-10 July 1986	Study tour of Open University
4.	Sh. P. Satyanarayana Joint Director	–do–	–do–	–do–
5.	Maj. Gen. G.S. Wirk (Retd.), Registrar (MPDD)	Thailand	27th July to 4th Aug. 1986	Study tour
6.	Sh. S. C. Vajpeyi Pro-V.C.	–do–	2-18 Sept. 1986	–do–
7.	Prof. Surender Sharma Professional Adviser	–do–	do–	–do–
8.	Mrs. Prabha Chawla Joint Director	Bangkok-Sydney-Brisbane	26th Nov., to 7th Dec. 1986	Study tour and presentation of paper
9.	Maj. Gen. G.S. Wirk (Retd), Registrar (MPDD)	Bangkok	19-23 March 1987	Study tour
10.	Prof. B.S. Sharma Pro-V.C.	–do–	22nd March to 3rd April, 1987	II International Conference on innovations in teaching learning through Distance Edn. for giving a Key Note Address.

ANNEXURE-VII (b)

LIST OF FOREIGN PROFESSORS INVITED ON VISITING BASIS

S.NO.	NAME & DESIGNATION	PERIOD OF VISIT WITH DATE	PURPOSE OF VISIT
1.	Dr. Deepak Saraswati Professor, Athabasca University, Canada	6th Oct. to 18th December, 1986	Appointed as Visiting Professor for participation in Course Development and format designing.
2.	Dr. T.S. Bakshi Professor, Athabasca University, Canada	30th Sept. to Dec. 1986	–do–

Printed at Sona Printers South Extension Part-I New Delhi-3 Ph. 626861 697631

MPDD-IGNOU/P.O.-15T/October, 1988